http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 6, 55-57

Article ID:607

किसान की आय दोगुनी करने के पाँच महामंत्र

डॉ. किरण एन. पटेल[1], डॉ. स्वाति एस. शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

[2]प्रोफेसर, ए.एस.पी.ई.ई. एग्रीबिजनेस प्रबंधन संस्थान, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी – गुजरात

***अनुरूपी लेखक**

किरण एन. पटेल*

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ आज भी लगभग आधी से अधिक आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान होने के बावजूद अधिकांश किसान सीमित आय, बढ़ती लागत, प्राकृतिक जोखिम, बाजार की अनिश्चितता तथा छोटे जोत आकार जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसे में केवल उत्पादन बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि किसानों की वास्तविक आय में वृद्धि करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

किसान की आय दोगुनी करने का अर्थ केवल अधिक फसल उत्पादन करना नहीं है, बल्कि खेती को लाभकारी, टिकाऊ तथा व्यवसायिक बनाना है। इसके लिए उत्पादन लागत कम करना, उत्पाद का बेहतर मूल्य प्राप्त करना, कृषि के साथ अन्य आय के स्रोत विकसित करना तथा आधुनिक तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। यदि किसान वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिक प्रबंधन तथा बाजार उन्मुख सोच के साथ खेती करें, तो उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि किसान पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर कृषि को एक उद्यम (Agribusiness) के रूप में देखें। इसी दिशा में पाँच ऐसे महत्वपूर्ण महामंत्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जो किसानों की आय बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रथम महामंत्र: फसल विविधीकरण एवं उच्च मूल्य वाली कृषि अपनाएँ

एक ही फसल पर निर्भर रहना किसानों के लिए जोखिमपूर्ण होता है। मौसम, कीट-रोग अथवा बाजार मूल्य में गिरावट आने पर किसान को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसलिए खेती में विविधता लाना अत्यंत आवश्यक है।

धान एवं गेहूँ जैसी पारंपरिक फसलों के साथ-साथ किसान बागवानी, फल, सब्जियाँ, मसाले, औषधीय एवं सुगंधित पौधे, फूलों की खेती तथा बीज उत्पादन जैसे उच्च मूल्य वाले कृषि व्यवसायों को अपनाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इन फसलों का बाजार मूल्य अपेक्षाकृत अधिक होता है तथा कम क्षेत्रफल से भी अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त जलवायु एवं स्थानीय बाजार की मांग के अनुसार फसल चयन करने से जोखिम कम होता है तथा पूरे वर्ष आय का स्रोत बना रहता है। एकीकृत कृषि प्रणाली, जिसमें फसल उत्पादन के साथ पशुपालन, बागवानी एवं अन्य गतिविधियाँ सम्मिलित हों, किसानों की आर्थिक स्थिरता को मजबूत बनाती है।

फसल विविधीकरण न केवल किसानों की आय बढ़ाता है बल्कि भूमि की उर्वरता बनाए रखने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

द्वितीय महामंत्र: आधुनिक तकनीक एवं वैज्ञानिक खेती अपनाएँ

वर्तमान समय में कृषि तेजी से तकनीक आधारित होती जा रही है। आधुनिक कृषि यंत्र, गुणवत्तापूर्ण बीज, संतुलित उर्वरक उपयोग, मृदा परीक्षण, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली तथा डिजिटल तकनीकों का उपयोग उत्पादन बढ़ाने और लागत घटाने में अत्यंत सहायक

है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर उर्वरकों का संतुलित उपयोग करने से अनावश्यक खर्च कम होता है तथा मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है। ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी तकनीकों से जल की बचत होती है और फसल की उत्पादकता बढ़ती है।

आज मोबाइल एप, मौसम पूर्वानुमान, ड्रोन तकनीक, सेंसर आधारित सिंचाई, सटीक कृषि (Precision Farming) तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सलाह किसानों के लिए उपलब्ध हैं। इन तकनीकों के माध्यम से किसान समय पर कृषि कार्य कर सकते हैं, रोग एवं कीट नियंत्रण की उचित योजना बना सकते हैं तथा उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं। यंत्रीकरण के माध्यम से श्रम लागत कम होती है, कार्य समय पर पूरा होता है तथा खेती अधिक लाभकारी बनती है। वैज्ञानिक संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा विकसित तकनीकों को अपनाकर किसान बेहतर उत्पादन एवं अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तृतीय महामंत्र: मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण एवं ब्रांडिंग करें

अधिकांश किसान केवल कच्चा कृषि उत्पाद बेचते हैं, जिसके कारण उन्हें सीमित लाभ मिलता है। यदि वही उत्पाद प्रसंस्करण, पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग के बाद बाजार में बेचा जाए तो उसकी कीमत कई गुना बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए गेहूँ बेचने की अपेक्षा आटा, बेसन, सूजी अथवा पैक्ड उत्पाद के रूप में बिक्री अधिक लाभदायक होती है। इसी प्रकार दूध से पनीर, घी, दही, मक्खन तथा अन्य दुग्ध उत्पाद बनाकर अधिक आय अर्जित की जा सकती है। फलों एवं सब्जियों से जैम, जेली, अचार, स्क्वैश, डिहाइड्रेटेड उत्पाद तथा अन्य प्रसंस्कृत वस्तुएँ तैयार कर किसान अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं।

आज उपभोक्ता गुणवत्ता, स्वच्छता एवं आकर्षक पैकेजिंग वाले उत्पादों को प्राथमिकता देते हैं। इसलिए किसानों एवं किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को अपने उत्पादों की ब्रांडिंग, लेबलिंग एवं गुणवत्तापूर्ण पैकेजिंग पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया तथा ऑनलाइन विपणन के माध्यम से किसान सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँच सकते हैं। इससे बिचौलियों पर निर्भरता कम होती है तथा किसानों को अपने उत्पाद का बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।

चतुर्थ महामंत्र: किसान उत्पादक संगठन (FPO) एवं सामूहिक विपणन अपनाएँ

भारत में अधिकांश किसानों के पास छोटे एवं सीमांत जोत हैं। व्यक्तिगत स्तर पर खेती करने से उत्पादन लागत अधिक होती है तथा बाजार में उचित मूल्य प्राप्त करना कठिन हो जाता है। ऐसे में किसान उत्पादक संगठन (FPO) किसानों के लिए अत्यंत प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। FPO के माध्यम से किसान सामूहिक रूप से बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र एवं अन्य आदानों की खरीद कर लागत कम कर सकते हैं। इसी प्रकार सामूहिक रूप से उत्पाद बेचने से बेहतर मोलभाव संभव होता है तथा बाजार में अधिक मूल्य प्राप्त होता है।

FPO किसानों को प्रसंस्करण, भंडारण, ब्रांडिंग, निर्यात, वित्तीय सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण तथा सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामूहिक प्रयास से छोटे किसान भी बड़े खरीदारों, सुपरमार्केट, प्रोसेसिंग उद्योगों एवं निर्यातकों से सीधे जुड़ सकते हैं। आज देशभर में हजारों सफल FPO किसानों की आय बढ़ाने, रोजगार सृजन करने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सामूहिकता ही छोटे किसानों की सबसे बड़ी शक्ति है।

पंचम महामंत्र: कृषि के साथ सहायक व्यवसाय अपनाएँ

केवल फसल उत्पादन पर निर्भर रहना आज के समय में पर्याप्त नहीं है। यदि किसान कृषि के साथ अन्य सहायक व्यवसायों को जोड़ दें, तो उनकी आय पूरे वर्ष बनी रहती है तथा जोखिम भी कम हो जाता है। दुग्ध उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, जैविक खाद उत्पादन, कृषि पर्यटन (Agri Tourism), नर्सरी व्यवसाय तथा कृषि यंत्र बैंक

जैसे अनेक व्यवसाय किसानों के लिए अतिरिक्त आय के उत्कृष्ट स्रोत बन सकते हैं।

विशेष रूप से एकीकृत कृषि प्रणाली (Integrated Farming System) में विभिन्न कृषि गतिविधियाँ एक-दूसरे की पूरक होती हैं। इससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है, अपशिष्ट का पुनः उपयोग संभव होता है तथा उत्पादन लागत कम होती है। उदाहरण के लिए पशुपालन से प्राप्त गोबर का उपयोग जैविक खाद बनाने में किया जा सकता है, जबकि कृषि अवशेषों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जा सकता है। इस प्रकार खेती अधिक टिकाऊ, पर्यावरण अनुकूल तथा लाभकारी बनती है।

सरकारी योजनाओं एवं डिजिटल सेवाओं का लाभ उठाना भी आवश्यक

आज केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा किसानों के लिए अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें कृषि यंत्रीकरण, सूक्ष्म सिंचाई, प्राकृतिक खेती, कृषि अवसंरचना, किसान क्रेडिट कार्ड, फसल बीमा, किसान सम्मान निधि तथा किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहन जैसी योजनाएँ शामिल हैं। इन योजनाओं का समय पर लाभ उठाकर किसान अपनी लागत कम कर सकते हैं तथा निवेश बढ़ा सकते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन मंडियाँ, मोबाइल एप, मौसम पूर्वानुमान सेवाएँ तथा कृषि सलाह पोर्टल किसानों को सही समय पर जानकारी उपलब्ध कराते हैं। सूचना आधारित निर्णय लेने से जोखिम कम होता है तथा आय बढ़ाने की संभावनाएँ अधिक होती हैं।

निष्कर्ष

किसान की आय दोगुनी करना केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए किसानों, वैज्ञानिकों, कृषि विश्वविद्यालयों, किसान उत्पादक संगठनों, निजी क्षेत्र तथा सरकार सभी की संयुक्त भागीदारी आवश्यक है। आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक सोच, सामूहिक विपणन, मूल्य संवर्धन तथा कृषि आधारित उद्यमिता को अपनाकर किसान अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना सकते हैं।

आज का सफल किसान केवल उत्पादक नहीं, बल्कि एक कुशल उद्यमी भी है। जो किसान समय के साथ नई तकनीकों को अपनाता है, बाजार की मांग को समझता है, गुणवत्ता पर ध्यान देता है तथा खेती के साथ अन्य आय स्रोत विकसित करता है, वही भविष्य में अधिक समृद्ध और आत्मनिर्भर बन सकता है।

अतः यदि किसान इन पाँच महामंत्रों—**फसल विविधीकरण, आधुनिक तकनीक, मूल्य संवर्धन एवं ब्रांडिंग, किसान उत्पादक संगठन तथा कृषि के साथ सहायक व्यवसाय**—को अपने कृषि जीवन का हिस्सा बना लें, तो उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। यही पाँच महामंत्र भारत के किसानों को समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित कृषि अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर करने का सशक्त मार्ग हैं।